मंजिल

बड़ी हो या छोटी हो
मंजिल जीवन की सच्ची हो,
चाहे किसी भी राह चलो
उस राह की गरिमा अच्छी हो,
सम्मान से जीने वाले की
ना नियत में कोई खराबी हो,
सब अपने है में सबका हूँ
ये सोच नही प्रेम का जज्बा है,
हर व्यक्ति के इस जीवन मे
कोई ना कोई दुख होता है,
सुख दुख की हर वेला में
हर हाल में खुश ही रहना है,
फूलों को देख जीने वाले
खुशबू की महिमा को गाते है,
सबको अपना मानने वाले
इस दुनिया में बड़े फ़रिश्ते हैं,
सेवा को अर्थ मानव को
परमार्थ की शिक्षा ही देता है,
अपने हिस्से की रोटी से
भूखे की भूख मिटाते रहते है,
धरती का कोना कोना
हर बीज अंकुरित होता है,
उसमें से निकला दाना
हर जीव की सुधा मिटाता है,
कर्मशील नियत वांला
जन जन की पीड़ा हरता हैं,
जय हिंद |

✍ **गोपाल कृष्ण व्यास**